بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-14.04.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विवेक पूर्ण कथनों की रोशनी में ला इलाहा इल्लल्लाह की विवेक पूर्ण व्याख्या। विश्व की सामान्य स्थिति एवं शांति तथा स्थिरता के लिए दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 14 अप्रैल 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआलाबिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- لا الٰہ الا اللہ वह कलमा ह जो तौहीद का आधार है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि निश्चित ही अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति को आग पर हराम कर दिया जिसने अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ा। अतएव जब अल्लाह तआला की ख़ुशी को पाने के लिए, उसकी ओर झुकते हुए अपने ध्यान को केवल अल्लाह तआला की ओर केन्द्रित एवं शुद्ध करते हुए इंसान لا الٰہ الا اللہ पढ़ता है तो वह अल्लाह तआला का कृपा पात्र बनता है।

जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला नरक की आग उस पर हराम कर देगा और यही शिक्षा थी जो समस्त नबी लेकर आए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सबसे उत्तम कलमा जो मैंने तथा पहले नबियों ने कहा वह لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ है। अतः यह शिक्षा समस्त नबियों की है किन्तु दुर्भाग्यवश उन्हीं नबियों की क़ौमों ने इस शिक्षा को स्वयं ही अथवा अन्य सूत्रों द्वारा भूल कर शिर्क का माध्यम बना लिया। हम भाग्य शाली हैं कि हमें अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में शामिल करके वह सम्पूर्ण शिक्षा दी जिसने शिर्क को पूर्णतः समाप्त कर दिया और आप स. ने तौहीद का वास्तविक पाठ देकर हमारी दुनिया तथा आख़िरत संवार दी। अतः अब जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वास्तविक शिक्षानुसार कर्म करेगा तथा शुद्ध होकर ख़ुदा तआला के एक अकेला ईश्वर होने को स्वीकार करेगा, वही अल्लाह तआला का कृपा पात्र बनेगा और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफ़ारिश का भी फल पाएगा।

आप स. की सिफ़ारिश के लिए पवित्र दिल के साथ لا الہ الا اللہ का इक़रार है जिसमें दुनिया का अंश न हो। आप स. वे अन्तिम तथा सम्पूर्ण नबी हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने सिफ़ारिश का अधिकार दिया है तथा आप स. की शफ़ाअत (सिफ़ारिश) के लिए अल्लाह तआला के आदेशानुसार आप स. पर ईमान लाना भी अनिवार्य है।

हम अहमदी भाग्य शाली हैं कि हमें अल्लाह तआला ने इस ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को मानने की तौफ़ीक़ प्रदान की जिन्होंने इस्लाम के निर्देशों को खोल कर उनकी गहराई तथा हिकमत के साथ बताया। जहाँ आप अलै. ने لا الہ الا اللہ की गहराई के बारे में हमें बताया वहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर के बारे में भी हमें बताया। इस समय मैं इस सम्बंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ वृत्तांत पेश करूँगा जो इस विषय पर अति सुन्दरता से रोशनी डालते हैं तथा हमारा ध्यान भी इस ओर आकर्षित करते हैं कि हमें भी इस विषय की गहराई को समझते हुए किस तरह आत्म निरीक्षण करना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने अपने फ़रमान اَلیوم اَکملتُ की व्याख्या आप ही फ़रमा दी है। इसमें तीन निशानियों का पाया जाना अति आवश्यक है। पहली اَصْلُهَا ثَابِتٌ जिसकी जड़ें मज़बूती से स्थापित हैं। दूसरी निशानी فَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ है कि उसकी शाखाएँ आकाश की बुलन्दियों तक पहुंची हुई हैं। तीसरी निशानी تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ के हर समय ताज़ा फल देती है। फ़रमाय कि इस्लाम ही वह दीन है जो इस स्तर पर पूरा उतरता है, और फ़रमाया कि पहली निशानी ईमानिया नियम से अभिप्रायः कलमा ला इलाहा इल्लल्लाह है जिसको इतने अधिक गुणों के साथ क़ुर्आन करीम में फ़रमाया गया है जिसके समस्त प्रमाणों को यदि लिखा जाए तो कई पुस्तकों में पूरे नहों हो सकते। ख़ुदा तआला के समस्त उत्पादन तथा सृष्टि की व्यवस्था स्पष्ट रूप से बतला रही है कि इस संसार का एक अविष्कारक तथा रचीयता है जिसके लिए ये आवश्यक गुण हैं कि वह दयावान, कृपावान, पूर्ण रूप से समर्थ, एक अकेला जिसका कोई सहयोगी न हो, अनन्त काल से तथा सदैव के लिए और अपनी इच्छानुसार युक्ति करने वाला भी हो तथा सम्पूर्ण गुणों एवं विशेषताओं में समृद्ध भी हो तथा वह्यी को अवतरित करने वाला भी हो। अतः ला इलाहा इल्लल्लाह केवल एक उपासनीय का विचार ही दिल में पैदा नहीं करता बल्कि इस बात को भी दिल में उतार देता है तथा उतारना चाहिए कि हमारा ख़ुदा अनादि काल से है तथा अनन्त तक रहेगा। वह प्रत्येक प्राणी का रचनाकार है तथा समस्त आवश्यकताओं के लिए उसके समक्ष ही झुकना है। अतः जब ईमान की यह अवस्था हो जाए तो वह सम्पूर्ण ईमान होता है जिसमें शिर्क की मिलावट हो ही नहीं सकती और यही वह ईमान है जिसके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि शुद्ध हाकर لا الہ الا اللہ पर ईमान लाने वालों पर नर्क की आग वर्जित है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ही वह सम्पूर्ण अस्तित्व है जिससे सहायता मांगने का हक़ है और कोई अन्य इस हक़ को नहीं रख सकता। इसी पर क़ुर्आन करीम ने ज़ोर दिया, अतः फ़रमाया कि उपासना भी तेरी करते हैं तथा तेरी उपासना करने के लिए सहायता भी तुझसे ही चाहते हैं, जिससे ज्ञात हुआ कि सहायता देने का मूल अधिकार अल्लाह तआला का ही है। दूसरे स्तर पर यह अधिकार अल्लाह वालों तथा सत्यपुरुषों को दिया गया है कि उनकी दुआओं से भी सहायता मिलती है। फ़रमाया कि

हमको नहीं चाहिए कि कोई बात अपनी ओर से बना लें बल्कि अल्लाह तआला के फ़र्मूदह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्देशों के अन्दर अन्दर रहना चाहिए, इसका नाम सच्चा और सीधा मार्ग है और यह बात ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह से भी भली भांति समझ में आ सकती है। لاالٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ के पहले भाग से पता चलता है कि इंसान का प्रिय तथा उद्देश्य अल्लाह तआला ही होना चाहिए तथा दूसरे भाग से रिसालत मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वास्तविकता प्रकट होती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि لاالٰہ الا اللہ का हक़ अदा नहीं होता जब तक कहने वाला अपने इक़रार में अमली रूप से साबित न कर दे और यही ईमान की शर्त है। अल्लाह तथा उसके बन्दों के अधिकार अदा करने का भी अमल होना आवश्यक है तब कहीं इंसान لاالٰہ الا اللہ पर अमल करने वाला बनता है तथा तब ही इंसान ख़ुदा तआला के समक्ष झूठा नहीं होता।

इस कलमे का दूसरा भाग नमूने के लिए है, नबी अलैहिस्सलाम नमूने दिखाने के लिए आते हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जामे (संयुक्त) नबी थे जिनमें समस्त नबियों के नमूने एकत्र थे, अल्लााह तआला के आदेशों पर उचित रंग में अमल तथा व्यापक व्याख्या आप स. ने ही फ़रमाई तथा उसके अनुसार अमल करके दिखाया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मानने वालों को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि बैअत रस्मी लाभ नहीं देती। ऐसी बैअत में भागीदार होना कठिन है जब तक अपने अस्तित्व को त्याग कर, शुद्ध होकर, जिसकी बैअत की है उसके साथ न हो जाए, तब ही बैअत हितकारी होगी। जहाँ तक सम्भव हो अन्य कर्मों तथा इबादतों में गुरु के रंग में रंगीन हो तथा सुबह से शाम तक अपना हिसाब करना चाहिए कि किस सीमा तक हमने لاالٰہ الا اللہ के अनुसार कर्म किए हैं। फिर फ़रमाया कि मेरा यह अभिप्रायः कदाचित नहीं कि मुसलमान कलमा पढ़ ले तथा सुस्त हो जाए, बल्कि अपने व्यापारों एवं नौकरियों में व्यस्त हो परन्तु ख़ुदा का हक़ अदा करने की ओर भी ध्यान होना आवश्यक है। अल्लाह तआला की अप्रसन्नता को व्यापार करते समय भी समक्ष रखे। प्रत्येक मामले में दीन को दुनिया पर प्रमुख रखे, दुनिया प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य न हो, मूल उद्देश्य दीन हो फिर दुनिया के काम भी दीन ही होंगे। सहाबा किराम रज़ी. ने भी कठिन से कठिन समय पर ख़ुदा को नहीं छोड़ा तथा न ही ख़ुदा से ग़ाफ़िल हुए और न नमाज़ें छोड़ीं, बल्कि दुआओं से काम लिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कलमे की वास्तविकता तथा इसके अर्थ एवं इसके अनुसार कर्म करने के विषय में फ़रमाते हैं कि ईमान लाना यही है कि अपने कर्मों के द्वारा उन बातों को व्यक्त कर दे जा अल्लाह तआला के आदेश क़ुर्आन करीम में बयान हुए हैं और फिर वास्तव में अमली रूप में दीन को दुनिया पर प्राथ्मिक कर दे। अतः जिसने सत्य मन से لاالٰہ الا اللہ को मान लिया, वह स्वर्ग में दाख़िल हो गया। फिर ख़ुदा के अलावा उसको कोई प्यारा नहीं रह सकता तथा वह केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता को चाहता है तथा कठिनाईयों से वह दुःखी नहीं होता क्यूँकि उसे विश्वास होता है कि अल्लाह तआला अपने वली की सहायता के लिए तुरन्त पहुंचता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब तक अल्लाह एवं उसके बन्दों के अधिकार नहीं दिए जाते उस समय तक لاالٰہ الا اللہ का वास्तविक अर्थ नहीं पा सकते। एक भाई दूसरे भाई का हक़ मारता है तथा साधनों पर इतना अधिक भरोसा करते हैं कि ख़ुदा तआला को केवल व्यर्थ का अंग मान रखा है। बड़े ही

कम लोग हैं जिन्होंने तौहीद के मूल अर्थ को समझा है। यदि इंसान कलमे की वास्तविकता से अवगत हो जावे तथा अमली रूप में उसके अनुसार कर्मबद्ध हो जावे तो वह बड़ी उन्नति कर सकता है तथा ख़ुदा तआला के आश्चर्य जनक एवं अद्भुत सामर्थ्यों के दर्शन कर सकता है। सच्चा एकेश्वरवादी उस समय ही बन सकता है जब समस्त बुराईयों को दूर कर दे। अतः इस रमज़ान में हममें से हर एक को प्रयास करना चाहिए कि इन बुराईयों से स्वयं को पाक करें और لا الٰہ الا اللہ पर वास्तविक रूप में ईमान लाने वाले हों। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ प्रदान करे कि रमज़ान के इन शेष दिनों में हम कोशिश और दुआ से अपने भीतर की समस्त बदियाँ निकालने वाले बन जाएँ।

रमज़ान के अन्तिम दशक में हम लैलतुल क़द्र की बातें करते हैं। लैलतुल क़द्र तो वास्तव में उस समय मिलती है जब हम अपना हर एक कथन एवं कर्म अल्लाह तआला के आदेशानुसार करने के लिए तय्यार हो जाएँ, इसके अनुसार कर्म करने वाले हों तथा इसे निरन्तर अपने जीवनों का अंश बनाने वाले हों। यही वह मूल निशानी है जो लैलतुल क़द्र के पाने की निशानी है। वास्तविक निशानी यह है कि हमारे दिलों में कैसी क्रान्ति पैदा हुई।

कुछ जमाअतों ने दुआओं के भी विशेष प्रोग्राम मेरी इस बात को सम्मुख रखते हुए बनाए हैं कि यदि हम शुद्ध होकर तीन दिन दुआएँ करें तो अल्लाह तआला की विशेष कृपा प्रकट हो सकती है। यदि हमने ये तीन दिन विशेषतः इस कारण से निश्चित किए हैं कि तीन दिन दुआओं में लगा लो और फिर अपनी पुरानी जीवन शैली पर आ जाओ और لا الٰہ الا اللہ के मूल उद्देश्य को भूल जाओ तो हमें याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला हमारे दिलों के हाल को जानता है, हमारी धारणाओं को जानता है, कोई चीज़ उससे छुपी हुई नहीं, ऐसी अवस्था में इसका कोई लाभ नहीं होगा। परन्तु यदि अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए ये दिन व्यतीत करना चाहते हैं तो फिर इस संकल्प के साथ गुज़ारने होंगे कि अब ये दिन हमारे जीवन का स्थाई अंश बन जाएँ। फिर ये कठिनाईयाँ जो विरोधी हमें पहुंचा रहा है उनको दूर करने के लिए ख़ुदा तआला अपने विशेष समर्थन एवं सहायता प्रकट करेगा, इन्शाअल्लाह।

अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा है कि आप अलै. तथा आप अलै. की जमाअत को विजयी करेगा, शीघ्र अथवा कुछ समय पश्चात, हाँ यदि हम لا الٰہ الا اللہ की वास्तविकता को समझते हुए अपना उपास्य, उद्देश्य एवं प्रिय केवल ख़ुदा तआला की ज़ात को बना लें तथा दुनिया से अधिक हमें ख़ुदा तआला से मुहब्बत और उसको पाना हमारा उद्देश्य हो तो इंक़लाब जल्दी आ सकता है। हमें अपनी अवस्थाओं में निरन्तर बदलाव करने का संकल्प करना होगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में फ़रमाया कि इन दिनों में विश्व के सामान्य अमन एवं स्थिरता के लिए भी दुआ करते रहें, अल्लाह तआला इंसानियत पर रहम और फ़ज़्ल फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131